The Significance of Multidisciplinary Research in Driving Innovations and Breakthroughs
ISBN Number: 978-93-95305-10-5

छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यालयों के विद्यार्थियों के आक्रामक व्यवहार का अध्ययन।

डॉ समीना कुरैशी
असिस्टेंट प्रोफेसर
जे ई एस कॉलेज, फरहदा, बिलासपुर, छत्तीसगढ

संक्षेपीकरण (Abstract) :– आक्रमक व्यवहार के लक्षण दैनिक जीवन में देखे जा सकते हैं। इस प्रकार आक्रमक व्यवहार के विभिन्न पक्ष एवं प्रकार होते हैं। पहले यह सोच थी कि आक्रमक स्वभाव अथवा अवसाद का होना किसी व्यक्ति के जीवन पर निर्भर करता है। किंतु एक नये शोध से पता चला है कि इसकी जड़ घर में होने वाली परवरिश और विद्यालय शिक्षा में छिपी है। सकारात्मक और नकारात्मक ढ़ंग की परवरिश किसी बच्चे के मानसिक स्वास्थ्य पर असर डालती है। इस प्रकार उसके गुण विकसित होते हैं। उग्र स्वभाव का बना देगी या फिर गलत रास्ते पर वह चला जायेगा। भावनात्मक प्रतिक्रिया या भावनात्मक अशांति और दुश्मनी के आधार पर हताशा की वजह से या वातावरण एक (Arousiung) के आक्रमक में एक ठोस कारक सिद्ध होती है। आक्रमकता को दूसरे दृष्टिकोण से देखा जाये तो किसी व्यक्ति का शत्रुतापूर्ण और विनाशकारी व्यवहार ही आक्रमकता है जिसका अर्थ एक आत्ममुखर एवं वह बल जो उसके आक्रमक स्वभाव की अभिव्यक्ति है।

मनुष्य भिन्न परिस्थितियों में भिन्न–भिन्न प्रकार का सामाजिक व्यवहार करता है। सामाजिक जगत में व्यक्तियों द्वारा प्रदर्शित किये जाने वाले सामाजिक व्यवहार में आक्रमकता और हिंसा का व्यवहार भी सहज रूप से देखा जा सकता है। आक्रमक व्यवहार के लक्षण दैनिक जीवन में देखे जा सकते हैं। आक्रमकता का स्वरूप, वाचिक अथवा भौतिक किसी भी प्रकार का हो सकता है। भौतिक आक्रमकता से तात्पर्य क्रोध के शिकार व्यक्ति की शारीरिक क्षति से है। वाचिक आक्रमकता में सामान्यता दूसरे व्यक्ति को अपमानित अथवा भयभीत होते हुये भी देखा जा सकता है।

महत्वपूर्ण शब्द (Key Words) :– छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी, विद्यार्थी ,आक्रामक व्यवहार ।

1. परिचय (Introduction) :–

आक्रमक प्रतिक्रिया के लिये पर्यावरण को भी महत्वपूर्ण कारण माना जा सकता है जिसमें उनके दर्दनाक अनुभव या ऐसी घटनायें जो सामान्यतः उनमें एक विशिष्ट उत्तेजना का जन्म दे तो किसी व्यक्ति को चोट पहुंचाये। आक्रमक व्यवहार में व्यक्ति का गुस्सा होना जरूरी नहीं है, असामान्य परिस्थिति में और अधिक उत्साह आक्रमक करने के लिये नेतृत्व कर सकते हैं। इस प्रकार आक्रमक व्यवहार के लिये विभिन्न स्त्रोत के माध्यम से किशोरों में किसी व्यक्ति पर उत्तेजना पूर्ण कार्य के लिये उकसाना या उसे उस कार्य के लिये प्रेरित करना। आक्रमकता तब प्रबल रूप में हो जाती है जब किसी व्यक्ति द्वारा वातावरण के अनुरूप आक्रमकता एक ठोस कारण सिद्ध होता है। यह स्थिति उस समय उत्पन्न होती है जब किशोर (बालक) द्वारा कोई

ISBN Number: 978-93-95305-10-5

पुरानी दर्द युक्त बात जो उसे तुरंत आक्रमककारी बना उसे अंजाम तक पहुंचाना हो आक्रमकता को प्रबल करती है।

2. **संबंधित साहित्य की समीक्षा (Review Related Literature)** :– संबंधित साहित्य के विश्लेषणात्मक अध्ययन के बिना शोधकर्ता अंधकार में भटकता रहेगा और संभवतः जो कार्य हो चुके हैं, उन्हें व्यर्थ में दुहरायेगा। अतएव समय, ऊर्जा तथा साधनों की बचत के लिये आवश्यक है कि सभी उपलब्ध साहित्य का विस्तृत व गहन अध्ययन किया जाए।

- **थॉमस, जी रीओ (2011)**

  ''पर्यवेक्षक एवं सहकर्मी असभ्यता कार्य नैराश्य का परीक्षण आक्रमकता प्रतिमान''।

  ज्नांकिकीय व व्यक्तित्व चरों, नैराश्य व पर्यवेक्षक एवं सहकर्मी असभ्यता को नियंत्रित करने के उपरांत अल्प मात्रा में संगठनात्मक समर्पण एवं कर्मचारी संतोष प्रदर्शित किया।

- **ब्राउन, लिपका (2010)**

  ''11–14 वर्षीय किशोरों में प्रयोगशाला संकल्प पर प्रच्छन्न मदिरा आक्रमकता स्क्रिप्ट्स एवं मदिरा संबंधित आक्रमकता''।समूह प्रदत्त के दोहराये गये उपायों के विश्लेषण प्रस्तुत करते हैं कि मदिरा शब्द आरंभ अन्य आक्रमक शब्द की तुलना में आक्रमक शब्दों के प्रति शीघ्र अनुक्रिया की ओर अग्रसर नहीं होते।

- **माजेद, एम.ए. (2009–2010)**

  ''दोनों ही लिंगों के विद्यालयीन किशोरों में प्रतिबल, सामाजिक कौशल व सामाजिक चिंता से सहर्चायत आक्रमकता''।

  इस अध्ययन का आयोजन अध्ययन में सम्मिलित सभी चरों के अंतर्गत लिंगों के मध्य अंतर ज्ञात करने हेतु किया गया वे चर हैं। आक्रमकता, प्रतिबल, सामाजिक कौशल व सामाजिक चिंता व उनके मध्य सहसंबंध।

- **सैनी, सुनील (2004)**

  ''ए.एच.ए. संलक्षण उग्रता एवं क्रोध के संबंध में आक्रमकता का एक अध्ययन''।

  इस विश्लेषण परिणामों से यह स्पष्ट किया कि लड़के व लड़कियों दोनों हेतु उग्रता शाब्दिक आक्रमकता की प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है। लड़के व लड़कियों दोनों हेतु शाब्दिक आक्रमकता से संबंधित नहीं था।

ISBN Number: 978-93-95305-10-5

3. उद्देश्य एवं परिकल्पनाएँ (Objective And Hypothesis) :–

अध्ययन का उद्देश्य (Objective of the Study) :– लघुशोध प्रबन्ध हेतु चयन को समस्या में निम्नलिखित महत्वपूर्ण उद्देश्य की पूर्ति अपेक्षित है। प्रस्तुत अध्ययन हेतु निम्न उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं –

प्रस्तुत लघुशोध अध्ययन निम्न उद्देश्य निर्धारित किये गये हैं जो इस प्रकार हैं –

1. छात्रावासी विद्यालयों की छात्राओं तथा गैर छात्रावासी विद्यालयों की छात्राओं के आक्रमक व्यवहार का अध्ययन।

2. छात्रावासी विद्यालयों के छात्रों तथा गैर छात्रावासी विद्यालयों के छात्रों के आक्रमक व्यवहार का अध्ययन।

अध्ययन की परिकल्पना (Hypothesis of the Study) :–

प्रस्तुत ुशोध में समस्या की सार्थकता के परीक्षण हेतु निम्न परिकल्पना की रचना मापनी गई है:–

H_1 छात्रावासी विद्यालयों की छात्राओं तथा तथा गैर छात्रावासी विद्यालयों की छात्राओं के आक्रमक व्यवहार में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

H_2 छात्रावासी विद्यालयों के छात्रों तथा गैर छात्रावासी विद्यालयों के छात्रों के आक्रमक व्यवहार में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

4. प्रणाली एवं प्रक्रिया (Methodology And Procedure) :–

विधि (Method) :– प्रस्तुत शोध अध्ययन में कक्षा 11वीं के छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यालयों के विद्यार्थियों का चयन उद्देशीय न्यादर्श विधि द्वारा किया गया है।

जनसंख्या (Population) :– इस शोध अध्ययन के लिए शोधकर्ता ने दुर्ग शहर के कक्षा 11वीं के छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यालयों के विद्यार्थियों का चयन किया है।

न्यादर्श (Sampling) :– प्रस्तुत शोध अध्ययन में उद्देशीय न्यादर्श विधि द्वारा कक्षा 11वीं में अध्ययनरत् 50 छात्रावासी तथा 50 गैर छात्रावासी विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

विस्तार एवं सीमांकन (Scope And Delimitation) :– प्रस्तुत अध्ययन में केवल दुर्ग शहर तक ही सीमित हैं। प्रस्तुत अध्ययन में 6 शालाओं को लिया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में कक्षा 11वीं के विद्यार्थियों को लिया गया है।

उपकरण (Tools) :– प्रस्तुत शोध में विद्यार्थियों के आक्रमक व्यवहार को जानने हेतु **डॉ जी.पी. माथुर** एवं **डॉ. राजकुमारी भटनागर** की मापनी का उपयोग किया गया है।

सांख्यिकीय प्रविधि (Statistical Techniques) :– इस अध्ययन में मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं 'टी' मूल्य का प्रयोग किया गया है।

5. विश्लेषण एवं चर्चा (Analysis and Discussion) :–

प्रमाणित कल्पनाएँ (Verification of Hypothesis) :–

H_1 छात्रावासी विद्यालयों की छात्राओं तथा गैर छात्रावासी विद्यालयों की छात्राओं के आक्रमक व्यवहार में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

उपर्युक्त परिकल्पना को सत्यापित करने के लिए प्राप्त आँकड़ों (प्राप्तांकों) को छात्रावासी विद्यालयों की छात्राओं एवं गैर छात्रावासी विद्यालयों की छात्राओं में विभाजित किया गया है। प्राप्त आँकड़ों का मध्यमान प्रमाणिक विचलन एवं "टी" मूल्य ज्ञात किया गया है। जिनका विवरण सारणी क्रमांक 1 में दिया गया है।

सारणी क्रमांक 1

छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यालयों की छात्राओं के आक्रमक व्यवहार का तुलनात्मक अध्ययन का सांख्यिकीय विवरण

क्र.	तुलनात्मक समूह	प्रदत्तों की संख्या (N)	मध्यमान (M)	प्रमाणिक विचलन (SD)	टी मूल्य (t)
1.	छात्रावासी विद्यालयों की छात्राएँ	25	215.64	30.02	0.022
2.	गैर छात्रावासी विद्यालयों की छात्राएँ	25	215.44	32.76	
df = 48 P > 0.05 स्तर पर सार्थक अंतर नहीं है।					

सारणी क्रमांक 1 से स्पष्ट होता है कि छात्रावासी विद्यालयों की छात्राओं के लिए N = 25, M = 215.64 और SD = 30.02 तथा गैर छात्रावासी विद्यालयों की छात्राओं के लिए N = 25, M = 215.44 और SD = 32.76 है।

अतः df = 48 पर t- मान = 0.022 प्राप्त हुआ जो df = 48 तथा सार्थकता स्तर 0.05 पर आवश्यक t- मान 2.01 से कम है। अतः छात्रावासी विद्यालयों की छात्राओं एवं गैर छात्रावासी विद्यालयों की छात्राओं के आक्रमक व्यवहार में सार्थक अंतर नहीं है।

ISBN Number: 978-93-95305-10-5

अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है।

H_2 छात्रावासी विद्यालयों के छात्रों तथा गैर छात्रावासी विद्यालयों के छात्रों के आक्रमक व्यवहार में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

उपर्युक्त परिकल्पना को सत्यापित करने के लिए प्राप्त आँकड़ों (प्राप्तांकों) को छात्रावासी विद्यालयों के छात्रों एवं गैर छात्रावासी विद्यालयों के छात्रों में विभाजित किया गया है। प्राप्त आँकड़ों का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं "टी" मूल्य ज्ञात किया गया है। जिनका विवरण सारणी क्रमांक 2 में दिया गया है।

सारणी क्रमांक 2
छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यालयों के छात्रों के आक्रमक व्यवहार का तुलनात्मक अध्ययन का सांख्यिकीय विवरण

क्र.	तुलनात्मक समूह	प्रदत्तों की संख्या (N)	मध्यमान (M)	प्रमाणिक विचलन (SD)	टी मूल्य (t)
1.	छात्रावासी शासकीय विद्यालयों के छात्र	25	203.92	37.15	0.73
2.	गैर छात्रावासी विद्यालयों के छात्र	25	211.4	34.36	
df = 48 P > 0.05 स्तर पर सार्थक अंतर नहीं है।					

सारणी क्रमांक 2 से स्पष्ट होता है कि छात्रावासी विद्यालयों के छात्रों के लिए $N = 25$, $M = 203.92$ और $SD = 37.15$ तथा गैर छात्रावासी विद्यालयों के छात्रों के लिए $N = 25$, $M = 211.4$ और $SD = 34.36$ है।

अतः $df = 48$ पर t- मान = 0.73 प्राप्त हुआ जो $df = 48$ तथा सार्थकता स्तर 0.05 पर आवष्यक t- मान 2.01 से कम है। अतः छात्रावासी विद्यालयों के छात्रों एवं गैर छात्रावासी विद्यालयों के छात्रों के आक्रमक व्यवहार में सार्थक अंतर नहीं है।

अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है।

संदर्भित ग्रन्थ (References)

- पाठक पी.डी. (2006), *"शिक्षा मनोविज्ञान"*, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा – 2, pp. 136–138.
- पाण्डेय, डॉ. रामसकल, पाठक,पी.डी. (2005–06) *"शिक्षा मनोविज्ञान"*, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा –2, पृष्ठ 58
- अस्थाना एवं अस्थाना, (2005), *"मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन"*, पुस्तक मंदिर, आगरा – 2, pp. 423–439, 201–210.
- शर्मा, आर.ए. (2003) *"शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकीय"*, लाल बुक डिपो मेरठ, पृष्ठ 28–32
- सिह, कुमार अरूण (2001) *"शिक्षा मनोविज्ञान"*, भारती भवन पाब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, पृष्ठ 196–214

- सक्सेना, एट ऑल, (2001) *"उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक"*, आर.लाल. बुक डिपों, बेंगम ब्रिज रोड, मेरठ, पेज. नं. 7, 12.
- पाठक पी.डी. (2000), *"शिक्षा मनोविज्ञान"*, विनोद पुस्तक मंदिर, मेरठ, पेज नं. 196.
- माथुर, एस.एस., (2000) *"शिक्षा मनोविज्ञान"*, अग्रवाल पाब्लिकशन, आगरा – 2, पेज नं. – 12, 254, 255, 260.
- सिंह, अरूण कुमार (1998) *"शिक्षा के सामाजिक मनोविज्ञान"*, वाल्यूम–2, पृ. 707–731
- पचौरी, डॉ. गिरीष (1998), *"शिक्षा के मनोवैज्ञानिक आधार"*, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा, पेज नं. 65, 67.
- गैरेट हेनरी ई. (1987*), "शिक्षा मनोविज्ञान में सांख्यिकी*, कल्याणी पब्लिशर्स, लुधियाना, पेज नं. 160.
- पाठक, पी.डी. एवं जी.एस.डी. (1985), *"शिक्षा मनोविज्ञान"*, लायन बुक डिपो,, मेरठ, पेज नं. 220.
- राय पारसनाथ, (1978*), "अनुसंधान का परिचय"*, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा, पेज नं. – 28.